''मीठे बच्चे – सबसे अच्छा दैवीगुण है शान्त रहना, अधिक आवाज़ में न आना, मीठा बोलना, तुम बच्चे अभी टॉकी से मूवी, मूवी से साइलेन्स में जाते हो, इसलिए अधिक आवाज़ में न आओ''

प्रश्नः- किस मुख्य धारणा के आधार से सर्व दैवीगुण स्वत: आते जायेंगे?

उत्तरः- मुख्य है पवित्रता की धारणा। देवतायें पवित्र हैं, इसलिए उनमें दैवीगुण हैं। इस दुनिया में कोई में भी दैवीगुण नहीं हो सकते। रावण राज्य में दैवीगुण कहाँ से आये। तुम रॉयल बच्चे अभी दैवीगुण धारण कर रहे हो।

गीतः- भोलेनाथ से निराला...

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) किसी से भी बहुत नम्रता और धीरे से बातचीत करनी है। बोलचाल बहुत मीठा हो। साइलेन्स का वातावरण हो। कोई भी आवाज़ न हो तब सर्विस की सफलता होगी।

2) सच्चा-सच्चा आशिक बन एक माशुक को याद करना है। याद में कभी आँखे बन्द कर कांध नीचे करके नहीं बैठना है। देही-अभिमानी होकर रहना है।

वरदानः- सर्व खजानों को स्व के प्रति और औरों के प्रति यूज़ करने वाले अखण्ड महादानी भव

जैसे बाप का भण्डारा सदा चलता रहता है, रोज़ देते हैं ऐसे आपका भी अखण्ड लंगर चलता रहे क्योंकि आपके पास ज्ञान का, शक्तियों का, खुशियों का भरपूर भण्डारा है। इसे साथ में रखने वा यूज़ करने में कोई भी खतरा नहीं है। यह भण्डारा खुला होगा तो चोर नहीं आयेगा। बंद रखेंगे तो चोर आ जायेंगे। इसलिए रोज़ अपने मिले हुए खजानों को देखो और स्व के प्रति और औरों के प्रति यूज़ करो तो अखण्ड महादानी बन जायेंगे।

स्लोगनः- सुने हुए को मनन करो, मनन करने से ही शक्तिशाली बनेंगे।

अव्यक्त इशारे
कम्बाइण्ड रूप की स्मृति से सदा विजयी बनो

सेवा और स्थिति, बाप और आप, यह कम्बाइन्ड स्थिति, कम्बाइन्ड सेवा करो तो सदा फरिश्ते स्वरूप का अनुभव करेंगे। सदा बाप के साथ भी हैं और साथी भी है – यह डबल अनुभव हो। स्व की लगन में सदा साथ का अनुभव करो और सेवा में सदा साथी का अनुभव करो।

''मीठे बच्चे – सर्वोत्तम युग यह संगम है, इसमें ही तुम आत्मायें परमात्मा बाप से मिलती हो, यही है सच्चा-सच्चा कुम्भ''

प्रश्नः- कौन-सा पाठ बाप ही पढ़ाते हैं, कोई मनुष्य नहीं पढ़ा सकते?

उत्तरः- देही-अभिमानी बनने का पाठ एक बाप ही पढ़ाते हैं, यह पाठ कोई देहधारी नहीं पढ़ा सकता। पहले-पहले तुमको आत्मा का ज्ञान मिलता है। तुम जानते हो हम आत्मायें परमधाम से एक्टर बन पार्ट बजाने आये, अभी नाटक पूरा होता है, यह ड्रामा बना बनाया है, इसे कोई ने बनाया नहीं इसलिए इसका आदि और अन्त भी नहीं है।

गीतः- जाग सजनियाँ जाग...

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) पुरुषोत्तम बनने के लिए कनिष्ट बनाने वाली जो ईविल बातें हैं वह नहीं सुननी हैं। एक बाप से ही अव्यभिचारी ज्ञान सुनना है।

2) नष्टोमोहा बनने के लिए देही-अभिमानी बनने का पूरा-पूरा पुरुषार्थ करना है। बुद्धि में रहे – यह पुरानी दु:ख देने वाली दुनिया है, इसे भूलना है। इससे बेहद का वैराग्य हो।

वरदानः- संगमयुग की सर्व प्राप्तियों को स्मृति में रख चढ़ती कला का अनुभव करने वाले श्रेष्ठ प्रारब्धी भव

परमात्म मिलन वा परमात्म ज्ञान की विशेषता है – अविनाशी प्राप्तियाँ होना। ऐसे नहीं कि संगमयुग पुरुषार्थी जीवन है और सतयुगी प्रारब्धी जीवन है। संगमयुग की विशेषता है एक कदम उठाओ और हजार कदम प्रारब्ध में पाओ। तो सिर्फ पुरुषार्थी नहीं लेकिन श्रेष्ठ प्रारब्धी हैं – इस स्वरूप को सदा सामने रखो। प्रारब्ध को देखकर सहज ही चढ़ती कला का अनुभव करेंगे। ''पाना था सो पा लिया'' – यह गीत गाओ तो घुटके और झुटके खाने से बच जायेंगे।

स्लोगनः- ब्राह्मणों का श्वांस हिम्मत है, जिससे कठिन से कठिन कार्य भी आसान हो जाता है।

अव्यक्त इशारे

कम्बाइण्ड रूप की स्मृति से सदा विजयी बनो

जैसे ब्रह्मा बाप को देखा कि बाप के साथ स्वयं को सदा कम्बाइण्ड रूप में अनुभव किया और कराया। इस कम्बाइण्ड स्वरूप को कोई अलग कर नहीं सकता। ऐसे सपूत बच्चे सदा अपने को बाप के साथ कम्बाइण्ड अनुभव करते हैं। कोई ताकत नहीं जो उन्हें अलग कर सके।

''मीठे बच्चे – हर एक की नब्ज देख पहले उसे अल्फ का निश्चय कराओ फिर आगे बढ़ो, अल्फ के निश्चय बिना ज्ञान देना टाइम वेस्ट करना है''

प्रश्नः- कौन-सा मुख्य एक पुरुषार्थ स्कॉलरशिप लेने का अधिकारी बना देता है?

उत्तरः- अन्तर्मुखता का। तुम्हें बहुत अन्तर्मुखी रहना है। बाप तो है कल्याणकारी। कल्याण के लिए ही राय देते हैं। जो अन्तर्मुखी योगी बच्चे हैं वह कभी देह-अभिमान में आकर रूसते वा लड़ते नहीं। उनकी चलन बड़ी रॉयल शानदार होती है। बहुत थोड़ा बोलते हैं, यज्ञ सर्विस में रुचि रखते हैं। वह ज्ञान की ज्यादा तिक-तिक नहीं करते, याद में रहकर सर्विस करते हैं।

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) योग में बहुत मेहनत है, ट्रायल करके देखना है कि कर्म में कितना समय बाप की याद रहती है! याद में रहने से ही कल्याण है, मीठे माशूक को बहुत प्यार से याद करना है, याद का चार्ट रखना है।
2) महीन बुद्धि से इस ड्रामा के राज़ को समझना है। यह बहुत-बहुत कल्याणकारी ड्रामा है, हम जो बोलते हैं वा करते हैं वह फिर 5 हज़ार वर्ष बाद रिपीट होगा, इसे यथार्थ समझ खुशी में रहना है।

वरदानः- अपने श्रेष्ठ जीवन द्वारा परमात्म ज्ञान का प्रत्यक्ष प्रूफ देने वाले मायाप्रूफ भव

स्वयं को परमात्म ज्ञान का प्रत्यक्ष प्रमाण वा प्रूफ समझने से मायाप्रूफ बन जायेंगे। प्रत्यक्ष प्रूफ है – आपकी श्रेष्ठ पवित्र जीवन। सबसे बड़ी असम्भव से सम्भव होने वाली बात प्रवृत्ति में रहते पर-वृत्ति में रहना। देह और देह की दुनिया के संबंधों से पर (न्यारा) रहना। पुराने शरीर की आंखों से पुरानी दुनिया की वस्तुओं को देखते हुए न देखना अर्थात् सम्पूर्ण पवित्र जीवन में चलना – यही परमात्मा को प्रत्यक्ष करने वा मायाप्रूफ बनने का सहज साधन है।

स्लोगनः- अटेन्शन रूपी पहरेदार ठीक हैं तो अतीन्द्रिय सुख का खजाना खो नहीं सकता।

अव्यक्त इशारे
कम्बाइण्ड रूप की स्मृति से सदा विजयी बनो

बाप को कम्पेनियन तो बनाया है अब उसे कम्बाइण्ड रूप में अनुभव करो और इस अनुभव को बार-बार स्मृति में लाते-लाते स्मृति-स्वरूप बन जाओ। बार-बार चेक करो कि कम्बाइण्ड हूँ, किनारा तो नहीं कर लिया? जितना कम्बाइण्ड-रूप का अनुभव बढ़ाते जायेंगे उतना ब्राह्मण जीवन बहुत प्यारी, मनोरंजक अनुभव होगी।

''मीठे बच्चे – अपनी उन्नति के लिए रोज़ पोतामेल निकालो, सारे दिन में चलन कैसी रही, चेक करो – यज्ञ के प्रति ऑनेस्ट (ईमानदार) रहे?''

प्रश्नः- किन बच्चों के प्रति बाप का बहुत रिगार्ड है? उस रिगार्ड की निशानी क्या है?

उत्तरः- जो बच्चे बाप के साथ सच्चे, यज्ञ के प्रति ईमानदार हैं, कुछ भी छिपाते नहीं हैं, उन बच्चों प्रति बाप का बहुत रिगार्ड है। रिगार्ड होने के कारण पुचकार दे उठाते रहते हैं। सर्विस पर भी भेज देते हैं। बच्चों को सच सुनाकर श्रीमत लेने की अक्ल होनी चाहिए।

गीतः- महफिल में जल उठी शमा...

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) अन्तर्मुखी बनकर शरीर के भान से परे रहने का अभ्यास करना है, खान-पान, चाल-चलन सुधारना है सिर्फ अपने को खुश करके अलबेला नहीं होना है।

2) चढ़ाई बहुत ऊंची है, इसलिए बहुत-बहुत खबरदार होकर चलना है। कोई भी कर्म सम्भालकर करना है। अहंकार में नहीं आना है। उल्टा कर्म करके सजायें नहीं तैयार करनी है। गांठ बांधनी है कि हमें इन लक्ष्मी-नारायण जैसा बनना ही है।

वरदानः- रुहानियत की श्रेष्ठ स्थिति द्वारा वातावरण को रुहानी बनाने वाले सहज पुरुषार्थी भव

रुहानियत की स्थिति द्वारा अपने सेवाकेन्द्र का ऐसा रुहानी वातावरण बनाओ जिससे स्वयं की और आने वाली आत्माओं की सहज उन्नति हो सके क्योंकि जो भी बाहर के वातावरण से थके हुए आते हैं उन्हें एकस्ट्रा सहयोग की आवश्यकता होती है इसलिए उन्हें रुहानी वायुमण्डल का सहयोग दो। सहज पुरुषार्थी बनो और बनाओ। हर एक आने वाली आत्मा अनुभव करे कि यह स्थान सहज ही उन्नति प्राप्त करने का है।

स्लोगनः- वरदानी बन शुभ भावना और शुभ कामना का वरदान देते रहो।

अव्यक्त इशारे

कम्बाइण्ड रूप की स्मृति से सदा विजयी बनो

बाप कम्बाइण्ड है इसलिए उमंग-उत्साह से बढ़ते चलो। कमज़ोरी, दिलशिकस्तपन बाप के हवाले कर दो, अपने पास नहीं रखो। अपने पास सिर्फ उमंग-उत्साह रखो। सदा उमंग-उत्साह में नाचते रहो, गाते रहो और ब्रह्मा भोजन करते रहो।

''मीठे बच्चे – अब यह नाटक पूरा होता है, तुम्हें वापिस घर जाना है, इसलिए इस दुनिया से ममत्व मिटा दो, घर को और नये राज्य को याद करो''

प्रश्नः- दान का महत्व कब है, उसका रिटर्न किन बच्चों को प्राप्त होता है?

उत्तरः- दान का महत्व तब है जब दान की हुई चीज में ममत्व न हो। अगर दान किया फिर याद आया तो उसका फल रिटर्न में प्राप्त नहीं हो सकता। दान होता ही है दूसरे जन्म के लिए इसलिए इस जन्म में तुम्हारे पास जो कुछ है उससे ममत्व मिटा दो। ट्रस्टी होकर सम्भालो। यहाँ तुम जो ईश्वरीय सेवा में लगाते हो, हॉस्पिटल वा कॉलेज खोलते हो उससे अनेकों का कल्याण होता है, उसके रिटर्न में 21 जन्मों के लिए मिल जाता है।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) स्वयं के चिंतन और पढ़ाई में मस्त रहना है। दूसरों को नहीं देखना है। अगर कोई अच्छा नहीं बोलता है तो एक कान से सुन दूसरे से निकाल देना है। रूठ करके पढ़ाई नहीं छोड़नी है।

2) जीते जी सब कुछ दान करके अपना ममत्व मिटा देना है। पूरा विल कर ट्रस्टी बन हल्का रहना है। देही-अभिमानी बन सर्व दैवीगुण धारण करने हैं।

वरदानः- भिन्नता को मिटाकर एकता लाने वाले सच्चे सेवाधारी भव

ब्राह्मण परिवार की विशेषता है अनेक होते भी एक। आपकी एकता द्वारा ही सारे विश्व में एक धर्म, एक राज्य की स्थापना होती है इसलिए विशेष अटेन्शन देकर भिन्नता को मिटाओ और एकता को लाओ तब कहेंगे सच्चे सेवाधारी। सेवाधारी स्वयं प्रति नहीं लेकिन सेवा प्रति होते हैं। स्वयं का सब कुछ सेवा प्रति स्वाहा करते हैं, जैसे साकार बाप ने सेवा में हड्डियाँ भी स्वाहा की ऐसे आपकी हर कर्मेन्द्रिय द्वारा सेवा होती रहे।

स्लोगनः- परमात्म प्यार में खो जाओ तो दुःखों की दुनिया भूल जायेगी।

अव्यक्त इशारे

कम्बाइण्ड रूप की स्मृति से सदा विजयी बनो

सदा स्मृति रखो कि कम्बाइण्ड थे, कम्बाइण्ड हैं और कम्बाइण्ड रहेंगे। कोई की ताकत नहीं जो अनेक बार के कम्बाइण्ड स्वरूप को अलग कर सके। प्यार की निशानी है कम्बाइण्ड रहना। यह आत्मा और परमात्मा का साथ है। परमात्मा तो कहाँ भी साथ निभाता है और हर एक से कम्बाइण्ड रूप से प्रीत की रीति निभाने वाला है।

''मीठे बच्चे – तुम्हारा यह ब्राह्मण कुल बिल्कुल निराला है, तुम ब्राह्मण ही नॉलेजफुल हो, तुम ज्ञान, विज्ञान और अज्ञान को जानते हो''

प्रश्नः- किस सहज पुरुषार्थ से तुम बच्चों की दिल सब बातों से हटती जायेगी?

उत्तरः- सिर्फ रुहानी धन्धे में लग जाओ, जितना-जितना रुहानी सर्विस करते रहेंगे उतना और सब बातों से स्वत: दिल हटती जायेगी। राजाई लेने के पुरुषार्थ में लग जायेंगे। परन्तु रुहानी सर्विस के साथ-साथ जो रचना रची है, उसकी भी सम्भाल करनी है।

गीतः- जो पिया के साथ है...

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) जितना टाइम मिले उतना टाइम यह रुहानी धंधा करना है। रुहानी धंधे के संस्कार डालने हैं। पतितों को पावन बनाने की सर्विस करनी है।
2) अन्तर्मुखी बन बाप को याद करना है। मुख से हे शब्द नहीं निकालना है। जैसे बाप को अहंकार नहीं, ऐसे निरहंकारी बनना है।

वरदानः- मन्सा संकल्प वा वृत्ति द्वारा श्रेष्ठ वायब्रेशन्स की खुशबू फैलाने वाले शिवशक्ति कम्बाइन्ड भव

जैसे आजकल स्थूल खुशबू के साधनों से गुलाब, चंदन व भिन्न-भिन्न प्रकार की खुशबू फैलाते हैं ऐसे आप शिवशक्ति कम्बाइन्ड बन मन्सा संकल्प व वृत्ति द्वारा सुख-शान्ति, प्रेम, आनंद की खुशबू फैलाओ। रोज़ अमृतवेले भिन्न-भिन्न श्रेष्ठ वायब्रेशन के फाउन्टेन के माफिक आत्माओं के ऊपर गुलावाशी डालो। सिर्फ संकल्प का आटोमेटिक स्विच ऑन करो तो विश्व में जो अशुद्ध वृत्तियों की बदबू है वह समाप्त हो जायेगी।

स्लोगनः- सुखदाता द्वारा सुख का भण्डार प्राप्त होना – यही उनके प्यार की निशानी है।

अव्यक्त इशारे

कम्बाइण्ड रूप की स्मृति से सदा विजयी बनो

जितनी शक्तियों की शक्ति है उतनी ही पाण्डवों की भी विशाल शक्ति है इसलिए चतुर्भुज रूप दिखाया है। शक्तियाँ और पाण्डव इन दोनों के कम्बाइन्ड रूप से ही विश्व सेवा के कार्य में सफलता प्राप्त होती है। इसलिए सदा एक दो के सहयोगी बनकर रहो। जिम्मेवारी का ताज सदा पड़ा रहे।

13-04-25 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "अव्यक्त बापदादा" रिवाइज:-31-12-2004 मधुबन

''इस वर्ष के आरम्भ से बेहद की वैराग्य वृत्ति इमर्ज करो, यही मुक्तिधाम के गेट की चाबी है''

- आज नवयुग रचता बापदादा अपने बच्चों से नव वर्ष मनाने के लिए आये हैं।
- दुनिया की हालतों को देखते हुए अब अपने विशेष दो स्वरूपों को इमर्ज करो, वह दो स्वरूप हैं – एक सर्व प्रति रहमदिल और कल्याणकारी और दूसरा – हर आत्मा के प्रति सदा दाता के बच्चे मास्टर दाता।
- स्व की स्थिति में भी चार बातें विशेष चेक करो – इसको कहेंगे तीव्र पुरुषार्थ। एक बात – निमित्त भाव है? चाहे सेवा में, चाहे स्थिति में, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क में चेहरा और चलन निमित्त भाव का हो। दूसरी विशेषता होगी – निर्मान भावना। निमित्त और निर्मान भाव से निर्माण करना। तो तीन बातें सुनी – निमित्त, निर्मान और निर्माण और चौथी बात है – निर्वाण। जब चाहे निर्वाणधाम में पहुंच जायें। क्योंकि स्वयं निर्वाण स्थिति में होंगे तब दूसरों को निर्वाणधाम में पहुंचा सकेंगे।
- जब बिल्कुल बेहद के वैरागी बन जायेंगे, वृत्ति में भी वैरागी, दृष्टि में भी बेहद के वैरागी, सम्बन्ध-सम्पर्क में, सेवा में सबमें बेहद के वैरागी... तभी मुक्तिधाम का दरवाजा खुलेगा। बेहद की वैराग्य वृत्ति है गेट खोलने की चाबी।

वरदान:- एकाग्रता के अभ्यास द्वारा एकरस स्थिति बनाने वाले सर्व सिद्धि स्वरूप भव

जहाँ एकाग्रता है वहाँ स्वत: एकरस स्थिति है। एकाग्रता से संकल्प, बोल और कर्म का व्यर्थपन समाप्त हो जाता है और समर्थपन आ जाता है। एकाग्रता अर्थात् एक ही श्रेष्ठ संकल्प में स्थित रहना। जिस एक बीज रूपी संकल्प में सारा वृक्ष रूपी विस्तार समाया हुआ है। एकाग्रता को बढ़ाओ तो सर्व प्रकार की हलचल समाप्त हो जायेगी। सब संकल्प, बोल और कर्म सहज सिद्ध हो जायेंगे इसके लिए एकान्तवासी बनो।

स्लोगन:- एक बार की हुई गलती को बार-बार सोचना अर्थात् दाग पर दाग लगाना इसलिए बीती को बिन्दी लगाओ।

अव्यक्त इशारे
कम्बाइण्ड रूप की स्मृति से सदा विजयी बनो

जैसे इस समय आत्मा और शरीर कम्बाइण्ड है, ऐसे बाप और आप कम्बाइन्ड रहो। सिर्फ़ यह याद रखो कि 'मेरा बाबा'। अपने मस्तक पर सदा साथ का तिलक लगाओ। जो सुहाग होता है, साथ होता है वह कभी भूलता नहीं। तो साथी को सदा साथ रखो। अगर साथ रहेंगे तो साथ चलेंगे। साथ रहना है, साथ चलना है, हर सेकेण्ड, हर संकल्प में साथ है ही।